विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -०३ -०७ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज शक्ति और क्षमा नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

तीन दिवस तक पंथ मांगते रघुपति सिंधु किनारे,
बैठे पढते रहे छन्द अनुनय के प्यारे प्यारे ।
हिंदी में अर्थ : तीन दिन (दिवस) तक भगवान राम (रघुपति) समुंद्र (सिंधु) के किनारे बैठे उससे लंका जाने के लिए रास्ता माँगते रहे। और बैठे बैठे समुन्द्र से अच्छे अच्छे श्लोक पढ़कर प्रार्थना (अनुनय) करते रहे।

उत्तर में जब एक नाद भी उठा नही सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से ।
हिंदी में अर्थ : जब समुन्द्र से एक भी आवाज (नाद) उत्तर के रूप में नहीं आयी , यानि कि समुन्द्र ने जब कोई उत्तर ना दिया। तब बेसब्र (अधीर) राम के बाण (शर) से पुरुषत्व (मर्दानगी , पौरुष) की आग (धधक) निकली , यानि कि तब राम ने बेसब्र होकर धनुष पर बाण चढ़ा लिया (समुन्द्र) को सुखाने के लिए।

सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज दासता ग्रहण की बंधा मूढ़ बन्धन में ।
हिंदी में अर्थ : समुन्द्र (सिंधु) मनुष्य रूप धारण कर (देह धर) , रक्षा करो रक्षा करो (त्राहि त्राहि) कहता हुआ भगवान राम की शरण में आ गिरा। और भगवान राम के पैर छूकर (चरण पूज) वह मूर्ख (मूढ़) भगवान की दासता (गुलामी) के बंधन में बंध गया। *(यहाँ समुन्द्र को मूर्ख कहा गया है क्योंकि उसने भगवान की बात तब ना मानी जब वो उससे प्रार्थना कर रहे थे) ।*

सच पूछो तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की,
संधिवचन सम्पूज्य उसीका जिसमे शक्ति विजय की ।
हिंदी में अर्थ : सच कहूं तो विनम्रता की चमक (दीप्ति) बाण (शर) में ही बसती (रहती) है। राजनैतिक मित्रता (संधि)

की बातें केवल उसकी ही मानने योग्य (सम्पूज्य) हैं जिसमें जीतने की ताकत (शक्ति) होती है।

सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है ।
हिंदी में अर्थ : सहने की शक्ति (सहनशीलता) , किसी को क्षमा करना और किसी पर दया करना , इन विशेषताओं को संसार तभी मानता (पूजता) है , जब इनके पीछे शक्ति (बल) का घमंड (दर्प) जगमगाता (जगमग) है।

--रामधारी सिंह दिनकर (कवि)

गृहकार्य –

(१) क्षमा किसके लिए शोभा देती है?
(२) **कौरवों के लिए दुष्ट शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है**?